वन उत्पादकता संस्थान रांची

पूर्वी भारत के राज्यों की अनुसंधान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए 1992 में वन उत्पादकता संस्थान रांची (आई पी एफ) की स्थापना की गई। इसका अधिमत, लाख विकास के साथ–साथ वानिकी अनुसंधान करना भी है। संस्थान के दो केन्द्र हैं यथाः वन मृदा वनस्पति सर्वेक्षण स्टेशन, मिदनापुर तथा पर्यावरणीय अनुसंधान केन्द्र सुकना, दार्जीलिंग। संस्थान द्वारा बिहार, झारखण्ड, सिक्किम और प. बंगाल में जनता तथा के विभिन्न पणधारियों और उपभोक्ता निकायों, एन जी ओ, अनुसंधान संगठनों के लाभ हेतु कई अनुसंधान कार्य और प्रशिक्षण योजनायें चलाई गई हैं।

वर्ष 2006-2007 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

परियोजना 1 : छोटा नागपुर पठार क्षेत्र तथा दक्षिण–पश्चिमी बंगाल से संबद्ध मूल्य प्रभावी पैकेज से विशेष वनीकरण आवश्यकताओं और विकास संबंधी परीक्षण [आई एफ पी–003/एस एल आर /2002–2007]

उपलब्धियां : कम्पोस्ट उत्पादन के लिए सस्ती, सरल और त्वरित तकनीकों को विकसित किया गया है। झाड़ियों और वनस्पतियों के मिश्रण से 60 दिनों के भीतर कम्पोस्ट तैयार किया जाता है जिसमें पानी के साथ वनस्पति को पुनः मिश्रित करके 10 प्रतिशत मृदा धूली और 5 प्रतिशत यूरिया मिलाया जाता है। इस प्रकार जहां कम्पोस्ट बनने में 90 दिन लगते थे वहां यह कार्य 60 दिनों में ही हो जाता है।

कम्पोस्ट उत्पादन

परियोजना 2 : झारखण्ड और दक्षिण प. बंगाल की मुख्य प्रजातियों के रोपण स्टॉक उत्पादन में सुधार के लिए उपयुक्त पॉटिंग मीडिया का मानकीकरण [आई एफ पी–002/एसएलआर/2002–2007]

उपलब्धियां : चार प्रजातियों यथा ऐकेसिया मैंजियम, डी. सिस्सू, जी. अर्बोरिया तथा यूकेलिप्टस कमलडूलेन्सिस के 90 सीसी रूट ट्रेनर्स पॉटिंग मीडिया परीक्षण में आकलित और रिकार्डित किया गया। 90 सी.सी. हाइकोपॉट में 4 प्रजातियों के पौधों को उगाया गया।

परियोजना 3 : उच्च विपणन क्षमतावान रिब्स की कृषि तकनीकों का विकास [आई एफ पी–023/ई आर एम/2004–2007]

उपलब्धियां : प. बंगाल के संवर्धन दक्षिणी प्रभाग से जिम्नेमा सेल्वेस्टा बीजों और इम्वेलिया रिब्स बीजों को प्राप्त किया गया।

परियोजना 4 : गैर परम्परागत होस्ट फ्लेमेंगिया प्रजति में लाख की खेती और सतत् वानिकी रोपणियों में इसकी संभावना [आई एफ पी–007/बी जी टी/2002–2007]

उपलब्धियां : जेठवी–06 लाख फसल को कंट्रोल और प्रायोगिक स्थितियों में होस्ट पादपों, फ्लेमिंगिया मैक्रोफाइला तथा फ्लेमिंगिया सेमीअलाटा पर उगाया गया।

फ्लेमिंगिया प्रजाति में लाख की खेती की संभावनाओं की खोज

वर्ष 2006-2007 के दौरान जारी की गई परियोजनाएं

परियोजना 1 : बांस प्रजातियों की विविधता, निष्पादकता, संरक्षण और अर्थशास्त्र पर बिहार, झारखण्ड और प. बंगाल के संदर्भ में अध्ययन [आई एफ पी–016/एस एल आर/2002–2008]

स्थिति : झारखण्ड और उत्तरी तथा दक्षिणी प. बंगाल के वनीय तथा गैर वनीय क्षेत्रों का कार्य क्षेत्रीय सर्वेक्षण किया गया। उत्तर पश्चिमी बंगाल में सर्वेक्षण के दौरान 35 बांस प्रजातियों को रिकार्ड किया गया।

बांस के झुरमुठ तथा झुरमुठ मापदण्डों से पता चलता है कि कई प्रजातियां 30 मीटर से अधिक की ऊंचाई तक पहुंच जाती हैं। अब तक पाया गया सबसे मोटा बांस धोरी बांस है जो जलपाइगुरी में पाया जाता है जिसका व्यास करीब 55.10 से.मी. होता है।

कार्यक्षेत्रीय सर्वेक्षण के दौरान प. बंगाल से एकत्र किये गये मृदा नमूनों की जांच की गई और बांस के वृद्धि मापदण्डों के साथ मृदाओं को संबद्ध किया गया।

बांस प्रसार तकनीकों के विकास पर पौधशाला परीक्षण : बांस की वानस्पतिक प्रसार तकनीकों को मानकीकृत करने के लिए संस्थान के मंदार केन्द्र में विभिन्न कर्तनों (डबल नोड, सिंगल नोड तथा सिंगल वाइफरकेटेड नोड) पर परीक्षण किये गये और तीन किस्म के वृद्धि कारक पदार्थों (जी पी एस–आई ए ए, आई बी ए तथा एन ए ए) को विभिन्न सांद्रणों (100, 200, 500 और 1000 पी पी एम) में विश्लेषित किया गया। बी. टुल्डा की अउपचारित कल्म कर्तनों के अंकुरण और जड़न को रिकार्ड किया गया, किन्तु जी पी एस के अनुप्रयोग से प्राप्त प्रवर्ध्य की संख्या अधिक पाई गई।

बांस की वानस्पतिक प्रसार पद्धतियों का मानकीकरण

उत्तम बांस रोपण सामग्रियों का परस्थानिक सर्वेक्षण : दक्षिण प. बंगाल से बी. बाल्कुआ–गुरी वुल्की/वुल्की बी. बाल्कुआ–हेडुआ वुल्की/धमन्ना वुल्की, बी. न्यूटान्स–बेरिआ बांस,बी. टुल्डा–टरल चपाती/चम्पाती, डी.–जिगेंटिया –बाम्बे बांस, कान्ता चम्पाती, कान्ता बेरिआ, कालधम्नी तथा सोनाकानी को एकत्रित किया गया और सामग्री को मुंदार अनुसंधान केन्द्र, आई एफ पी, रांची में जुलाई 2006 को रोपित किया गया।

परियोजना 2 : छोटा नागपुर तथा संथाल परगना की चयनित औषधीय वनस्पतियों के लिए उपयुक्त संवर्धनीय पद्धतियों का विकास [आई एफ एम–022/एफ आर एम/2003–2008]

स्थिति : पॉलीशेड के नीचे पॉली पाट्स में ग्लोरियोसा सुपर्बा पादपों को सफलतापूर्वक उगाया गया।

मन्दार अनुसंधान केन्द्र आई एफ पी में प्रकन्दों का रोपण

परियोजना 3 : दार्जीलिंग हिमालय के संकटापन्न औषधीय पादपों के लिए जर्मप्लाज्म की रचना [आई एफ पी–018/ई बी सी/2003–2008]

स्थिति : सर्पगंधा (रोवोल्फिया सर्पेन्टिना) के 4000, बांजों (एकोरस केलेमस के 2000, धोतीसरा (करीकूलिगो आर्किओइड्स) के 1000, और डायोस्कोरिया (डायरस्कोरिया डेल्टोडिया) के 2000 पादपों सहित 9000 औषधीय पादपों को उगाया गया और उन्हें किसानों में वितरित किया गया।

वर्ष 2006-2007 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं

परियोजना 1 : स्केलिकेरिया ओलिओसा के वृहद प्रसार की तकनीकों का मानीकरण तथा कृन्तक फिडिलिटी अध्ययन

स्थिति : तना कर्तनों पर अध्ययन शुरू किये गये हैं।

वर्ष 2006-2007 के दौरान पूरी की गई नई परियोजनाएं (बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1 : पूर्वी हिमालय में किसानों में रोपण सामग्री का वितरण और प्रदर्शन करने हेतु विभिन्न औषधीय पादप उद्यानों की स्थापना (निधिकरण निकाय : एन एम पी बी, भारत सरकार) [आई एफ पी–027/एन एम पी वी/2004–2007]

उपलब्धियां : 40 औषधीय पादपों पर पुस्तिका तैयार की गई।

पूर्वी हिमालय में विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों में औषधीय पादप उद्यान

वर्ष 2006-2007 में जारी की गई परियोजनायें (बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1 : झारखण्ड की मुख्य तेल उत्पादक वृक्ष प्रजातियों की पहचान, संग्रह तथा आनुवंशकीय मूल्यांकन (निधिकरण निकाय : एन ए बी ए आर डी) [आई एफ पी–028/एन ए वी ए आ डी/2005–2008]

स्थिति: पादप फील्ड में स्थापित हो गये है और विभिन्न पैमानों पर उनका प्रदर्शन संतोषजनक है।

वर्ष 2006-2007 के दौरान शुरू की गई परियोजनाएं (बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1: झारखण्ड की कुछ चयनित जिलों में परम्परागत देशज औषधीय ज्ञान का प्रलेखीकरण और सम्पत्ति सूचीकरण (निधिकरण निकाय : एन एम पी बी)

स्थिति : सारंदा वनों के सबसे दूरदराज के क्षेत्रों में थोल्काबाद और टिरिलपोसी में सर्वेक्षण किया गया। वनों में स्थित गांव में रहने वाले हो जनजातियों के लोगों से विचार–विमर्श करने के उपरान्त उनके परम्परागत औषधीय ज्ञान के बारे में मूल्यवान सूचनायें प्राप्त की गई।

झारखंड में परम्परागत जड़ीय औषधियां

परियोजना 2: बुक्सा बाघ रिजर्व, पं. बंगाल, भारत में संकटापन्न आर्चिड्स पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव की जांच [ई डब्ल्यू आई द्वारा निधिकृत]

स्थिति : इस अध्ययन में आर्चिड्स के वितरण और आबादीकरण को नये ढंग से जांचा जा रहा है। यहां वातावरण को नियत चर माना गया है जबकि वास प्रवणता (ग्रेडियेन्ट) और वनस्पतिक वितरण को आश्रित चर मान गया है। इन वैविध्यपूर्ण घटकों पर आधारित आर्चिड्स को बुक्सा बाघ 15 नमूनों भूखंडों के तीन ब्लाकों में मूल्यांकित किया गया है। घनत्व, बारम्बारता और प्रभाविता अध्ययनों के साथ आनुवंशीय स्तर पर प्रत्येक आर्चिड का आबादीकरण क्रम, प्राथमिकतायें और गहनता का मूल्यांकन किया गया। एक नई किस्म का पता चला जिसे नई प्रजाति का नाम देने की आवश्यकता है।

बुक्सा बाघ रिजर्व में संकटापन्न आर्चिड्स पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव की जाँच

आबादीकरण की प्राथमिकता और वैविध्य की गहनता को ध्यान में रखते हुए गतिशील आर्चिड्स पारितंत्र की एक नई संकल्पना को विकसित किया जा रहा है।

सारांश : परियोजनाओं की संख्या

	2006–2007 में पूरी की गई परियोजनाओं की संख्या	2006–2007 में जारी परियोजनाओं की संख्या	2006–2007 में शुरू की गई परियोजनाओं की संख्या
प्लान परियोजनायें	–	1	1
बाह्य परियोजनायें	–	1	–
योग	–	2	1

प्रौद्योगिकी मूल्यांकित और हस्तांतरित

वन उत्पादन संस्थान द्वारा वन उत्पादकता और पर्यावरण संरक्षण/पुनरूत्थान से संबंधित तकनीकों को उपभोक्ता वर्गों में हस्तान्तरित करने की विधि विकसित की है।

मूल्यांकित प्रौद्योगिकी

1. बांसों का वृहद प्रसार।
2. महत्वपूर्ण वन प्रजातियों की वृहद प्रसारण तकनीकें।
3. मृदा का प्रयोगशाला विश्लेषण तथा कमियों को दूर करना।
4. लाख उत्पाद की सुधारित तकनीकें।
5. कम्पोस्टिंग/वर्मी कम्पोस्टिंग द्वारा कार्बनिक जल को पुनः चक्र में लाना।
6. रूट ट्रेनर्स का उपयोग करते हुए हाईटेक पौधशालाओं में स्तरीय रोपण सामग्री तैयार करना।
7. अतिखनित तथा समस्याग्रस्त मृदाओं में जैव पुनरूद्धार ।
8. चयनित औषधीय पादपों की विस्तार तकनीकें।

शिक्षा और प्रशिक्षण

प्रशिक्षण

1. पुरलिया, पं. बंगाल में ''पायलेट ब्रूडलेक फार्म के विकास तथा लाख फिनिशिंग सुविधाओं'' के अंतर्गत ''आधुनिक तकनीकों से लाख की खेती'' पर वन अधिकारियों, ग्रामीणों, जसीपुर उड़ीसा के वन रक्षकों तथा छत्तीसगढ़ के किसानों और राज्य वन विभागों के वन कर्मियों, ग्रामीणों, स्टाफ, पूर्वी और पश्चिमी गारू एवं बेरमैन्ड रेंज, लाख कृषकों और धनबाद वन प्रभाग के स्टॉफ, शेलाख, निर्यात वृद्धि परिषद् द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षणार्थियों के लिए प्रशिक्षण आयोजित किया गया। लाख की खेती करने वालों और राज्य वन विभाग डाल्टनगंज, पलामू, किसानों और वन कर्मियों जशपुर वन प्रभाग, छत्तीसगढ़, मुख्य प्रशिक्षक पत्थर गांव, टप्कारा तथा अरामनपुर रेंज, जशपुर वन प्रभाग, छत्तीसगढ़ राज्य, लटेहर लैम्प्स, राज्य वन विभाग झारखण्ड, वरगांव की वन रक्षण समिति और रामगढ़ एस एफ डी, छत्तीसगढ़ के लिए 20–22 फरवरी 2006, 21–22 अप्रैल 2006, 1–3 मई 2006, 18 जून,

2006, 19–20 जून 2006, 21–22 जून 2006, 25 जून 2006, 24 से 28 जुलाई 2006, 1–3 सितम्बर 2006, 14–17 अक्टूबर 2006 तथा 14 और 15 अक्टूबर 2006 को प्रशिक्षण आयोजित किये गये।

2. हजारीबाग वन गार्ड प्रशिक्षण स्कूल हजारीबाग के लिए 27 मई 2006 को 'कम्पोस्टिंग, वर्मीकम्पोस्ट, बांस मैक्रो प्रसारण, ऊतक व्यवहार द्वारा बांस और कुसुम का प्रसार, हजारीबाग वन रक्षक प्रशिक्षण स्कूल, हजारीबाग में 27 मई 2006 को प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

3. राज्य वन विभाग झारखण्ड के रेंजरों और सहायक वन संरक्षकों के लिए 12 से 16 फरवरी 2007 और 19 से 23 फरवरी 2007 तक ''बांस प्रसार'' पर प्रशिक्षण आयोजित किये गये।

राज्य वन विभाग झारखण्ड के राजि अधिकारियों और सहायक
वन संरक्षकों के लिए बांस प्रवर्धन पर प्रशिक्षण

सहानुबंध और सहयोग

अंतर्राष्ट्रीय

अर्थ वाच संस्थान, यू एस ए, अंतर्राष्ट्रीय विकास विभाग, यू के, तथा अंतर्राष्ट्रीय विकास अनुसंधान केन्द्र (आई डी आर सी)।

राष्ट्रीय

नाबार्ड (एन ए बी ए आर डी), राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, केन्द्रीय कोल फील्ड्स लिमिटेड, दामोदर घाटी कार्पोरेशन, गोंद और रेजिन का भारतीय संस्थान, नमकुम, भारतीय खनन स्कूल, धनबाद, उद्यान और कृषि वानिकी अनुसंधान कार्यक्रम, प्लांघू, विरसा कृषि विश्वविद्यालय, कांके, रांची, राज्यवन विभाग बिहार, एस आई, पूर्वी क्षेत्र, कलकत्ता, टाटा स्टील, हजारी बाग, योजना आयोग, भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार।

प्रकाशन

1. संस्थान का वार्षिक लाख बुलेटिन।
2. लाख की खेती की सुधारित पद्धतियों पर पुस्तिका ।
3. ''वन उत्पादन की उत्तम तकनीकें परवर्धन विधि'' पर पुस्तिका।
4. अनुसंधान प्रलेख–यूकेलिप्टस पर विविध अध्ययन। उच्च उत्पादक यूकेलिप्टस कमलडूलिन्सिस की पत्तियों की विकास क्षमता, सुमिता तथा एच सी सिन्धु वीरेन्द्र (2005)। माई फॉरेस्ट, 41 (3) पे० 413–42 में प्रकाशित।
5. बिहार राज्य के गमहर, कदम, सेमल, समुदाई आधारित समन्वित वन प्रबंधन एवं संरक्षण योजना तथा बांस की खेती पर हिन्दी में पुस्तकें तैयार और प्रकाशित की गई।

परामर्श

1. झारखण्ड के बांस संसाधनों का सर्वेक्षण, झारखण्ड राज्य वन विभाग कार्यों रेशन लिमिटेड द्वारा निधिकृत।
2. पूर्वी क्षेत्र के विभिन्न जिलो में वनीय मृदा तथा वन धरा के घास फूस में आर्गेनिक कार्बन का आंकलन तथा 65 डि.से. में शुष्क भार प्रतिशत का मूल्यांकन। द्वारा आई सी एफ आर ई तथा एफ एस आई, पूर्वी जोन कलकत्ता के बीच समझौता ज्ञापन (एम ओ यू) हस्ताक्षरित।
3. मैथोन राइट बैंक थर्मल पावर परियोजना, डी वी सी और चन्द्रपुर थर्मल पावर स्टेशन, डी वी सी चन्द्रपुर में हरित पट्टिका का विकास।
4. केन्द्रीय कोलफील्ड लिमिटेड द्वारा रांची में पांच हेक्टेयर कम्पनी की भूमि पर बायो एस्थेटिक हेबीटेट का विकास।
5. एस ई पी सी कलकत्ता का आई एफ पी के साथ जिला पुरोला पं. बंगाल में लाख की वैज्ञानिक खेती के बारे में सहयोग तथा अग्रगामी ब्रूडलेक फार्म और लाख फिनिशिंग सुविधाओं का विकास।
6. टाटा पावर कम्पनी लिमिटेड द्वारा 120 एम डब्ल्यू थर्मल पावर यूनिट की स्थापना।
7. टाटा स्टील, धटोटान्ड, हजारी बाग से प्राप्त मृदा नमूनों का फीजियों केमिकल विश्लेषण तथा फीजिकल विश्लेषण का आकलन।

सम्मेलन/बैठकें/कार्यशालायें/सेमीनार/संगोष्ठी/प्रदर्शनियां

आयोजित

1. संस्थान की 8वीं आर ए जी बैठक का आयोजन 17 नवम्बर 2006 को श्री आर के जुत्सी, पी सी सी एफ, झारखण्ड की अध्यक्षता में किया गया।
2. संस्थान द्वारा ''वानिकी विस्तार रणनीति समीक्षा'' 23 मार्च 2007 को आयोजित की गई जिसमें राज्य वन विभागों, विश्वविद्यालयों, केन्द्र/राज्य सरकारी संगठनों, एन जी ओ, प्रगतिशील किसानों तथा अधिकारियों, वैज्ञानिकों तथा अनुसंधान अधिकारियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में डी डी जी (विस्तार), आई सी एफ आर ई तथा पूर्व अतिरिक्त आई जी (भारत सरकार) ने भी भाग लिया।

भागीदारी

1. श्री पी आनन्द, डी सी सी एफ ने 1 मई 2006 को पटना का दौरा किया जो बिहार राज्य की समुदाय आधारित समन्वित वन प्रबंधन एवं संरक्षण योजना से संबंधित थी। इसे योजना आयोग भारत सरकार द्वारा प्रायोजित किया गया था।
2. श्री आर कृष्णमूर्ति, निदेशक ने बैठक में भाग लेने तथा ''बिहार राज्य के समुदाय आधारित समन्वित वन प्रबंधन एवं संरक्षण योजना'' के तहत कार्य क्षेत्रीय दौरा करने के लिए 9 और 10 जून 2006 को पटना और वैशाली का दौरा किया जिसे योजना आयोग भारत सरकार द्वारा प्रायोजित किया गया था।
3. श्री आर कृष्णमूर्ति, निदेशक ने प्लानिंग कमीशन की स्टीरिंग कमेटी, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित ''बिहार राज्य की समुदाय आधारित समन्वित वन प्रबंधन एवं संरक्षण योजना'' की बैठक में भाग लेने हेतु पी सी सी एफ, बिहार के साथ 25 और 26 सितम्बर को दौरा किया।
4. श्री आर कृष्णमूर्ति, निदेशक ने अनुसंधान एवं विस्तार परियोजनाओं के संबंध में 3 नवम्बर 2006 को एन ए बी ए आर डी, झारखण्ड का दौरा किया।
5. निदेशक, आई पी एफ रांची ने 22 नवम्बर 2006 को नई दिल्ली में आई सी एफ आर ई की बैठक में भाग लिया।
6. श्री आर कृष्णमूर्ति, निदेशक, श्री रामेश्वर दास, वन संरक्षक, आई पी एफ, रांची तथा डा. अतुल के श्रीवास्तव, ए डी जी (प्रशा.), आई सी एफ आर ई, देहदादून ने समुदाय आधारित समन्वित वन प्रबन्धन एवं संरक्षण योजना पर राज्य स्तरीय स्टीयरिंग कमेटी की बैठक में पटना में 22 जनवरी 2007 को भाग लिया।
7. श्री आर कृष्णमूर्ति, निदेशक, श्री रवि होरो, डी सी एफ तथा डॉ. अनिमेष सिन्हा, वैज्ञानिक सी ने 26–27 फरवरी 2007 को आर पी सी की बैठक में भाग लिया और साथ ही आई सी एफ आर ई, देहरादून में निदेशकों की बैठक में भाग लिया।
8. श्री आर कृष्णमूर्ति, निदेशक ने डी बी सी कमाण्ड क्षेत्र के लिए ''उपयुक्ततम वनीकरण योजना'' की तैयारी पर

कोर कमेटी की तैयारी में भाग लिया जिसका आयोजन डी वी सी टावर, कलकत्ता में 25 जून 2006 को किया गया।

9. डॉ. बी एन दिवाकर, वैज्ञानिक बी ने ''परती भूमि एवं जीवन संसाधन : पूर्वी भारत में समस्यायें और उपाय'' पर दो दिवसीय विचार–विमर्श में भाग लिया जिसका आयोजन परती भूमि विकास प्रोन्नति सोसाइटी, नई दिल्ली द्वारा 12 और 13 सितम्बर 2006 को होटल अशोका रांची, झारखण्ड में किया गया था।

10. ''झारखण्ड के जनजातीय क्षेत्रों में लाख की सुधारित खेती''भाग लिया। भाग लिया। पर परियोजना विस्तार के लिए विचार–विमर्श हेतु 10 नवम्बर 2006 को सी जी एम, एन ए बी ए आर डी, क्षेत्रीय कार्यालय रांची में बैठक का आयोजन किया गया।

11. निदेशक, आई पी एफ रांची ने ''टसर संवृद्धि पर जैव प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप'' पर दिमाग को झकझोर देने वाले सम में भाग लिया जिसका आयोजन केन्द्रीय रेशम बोर्ड तथा डी बी टी द्वारा संयुक्त रूप से 16 नवम्बर 2006 को किया गया था।

12. श्री रामेश्वर दास, वन संरक्षक ने राष्ट्रीय वनीकरण कार्यक्रम देशव्यापी स्वामी के मध्यावधि मूल्यांकन के लिए नोडल अधिकारी के रूप में कार्य वर्ग की बैठक में भाग लिया जिसका आयोजन आई सी एफ आर ई, देहरादून में 7 दिसम्बर 2006 को किया गया था।

13. श्री आर कृष्णमूर्ति, निदेशक ने वन मंत्री छत्तीसगढ़ राज्य की अध्यक्षता में 3 जनवरी 2007 को राज्य स्तरीय लाख कमेटी की मीटिंग में भाग लिया।

14. श्री आर कृष्णमूर्ति, निदेशक ने आई सी एफ आर ई, देहरादून में 31 जनवरी 2007 को आयोजित राष्ट्रीय वनीकरण कार्यक्रम – वन विकास निकाय की मध्यावधि मूल्यांकन बैठक में भाग लिया।

अवार्ड्स

संस्थान द्वारा पी एच डी स्कॉलर के लिए नामित श्रीमती नवनीत चौधरी, को वन अनुसंधान संस्थान, विश्वविद्यालय देहरादून से पी एच डी की डिग्री प्रदान की गई।

प्रतिष्ठित आगन्तुक

1. सुश्री हन्नाह रूले, प्रोग्राम मैनेजर तथा श्री स्टीव, अर्थवाच संस्थान, बोस्टन, एम ए,यू एस ए ने 17 और 18 अप्रैल 2006 को संस्थान का दौरा किया और ''बुक्सा बाघ रिजर्व, पं. बंगाल, भारत में संकटापन्ना आर्चिड्स पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का अन्वेषण'' पर विचार विमर्श किया।
2. श्री बलवीर सिंह, ए डी जी (मॉनीटरिंग तथा मूल्यांकन), आई सी एफ आर ई, देहरादून ने ऊतक संवृद्धि प्रयोगशाला, वर्मी कम्पोस्ट एकक्, मृदा लैब तथा कार्य क्षेत्रीय परीक्षणों पर वन अनुसंधान केन्द्र, मंदार का दौरा किया।
3. श्री ए के श्रीवास्तव, ए डी जी (शिक्षा) आई सी एफ आर ई ने 2 मई 2006 की आई एफ पी रांची का दौरा किया।
4. डा. शशी कुमार, निदेशक (अनुसंधान) आई सी एफ आर ई ने 22 अगस्त 2006 को संस्थान का दौरा किया।
5. डा. अतुल कुमार श्रीवास्तव, ए डी जी (प्रशा.) ने समुदाय आधारित, समन्वित वन प्रबंधन एवं संरक्षण योजना (बिहार राज्य) के तहत एफ आर डी सी पटना का दौरा किया।
6. सुव्रतो विश्वास, सचिव दामोदर घाटी कार्पोरेशन तथा श्री एस बरारी, मुख्य पर्यावरण अधिकारी, डी वी सी ने 24 जनवरी 2007 को संस्थान का दौरा किया।
7. डा. एम बनर्जी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, पं. बंगाल राज्य विज्ञान परिषद् एवं तकनीक, कलकत्ता ने एफ आर सी मन्दार का दौरा किया।
8. मुख्य अभियंता सी मी यू, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने 9 से 11 मार्च 2007 को रांची का दौरा किया।
9. श्री आर कृष्णमूर्ति, निदेशक, आई पी एफ और श्री एम एस गर्ब्याल, डी डी जी (प्रशा०), आई सी एफ आर ई ने ''एस ए वी पी ई एस बिहार राज्य योजना'' के तहत 15 और 16 मार्च 2007 को पटना का दौरा किया।

भा.वा.अ.शि.प. के अधिकारियों का परियोजना स्थल का दौरा